प्रो. इन्द्रकान्त झा कृत मैथिली कविता-संग्रह ***हम बूढ़ छी*** का हिन्दी अनुवाद

मैं बूढ़ा हूँ

अनुवाद

राहुल राज गुप्ता

अनुप्रास पेपरबैक्स

प्रो. इन्द्रकान्त झा कृत मैथिली कविता-संग्रह ***हम बूढ़ छी*** का हिन्दी अनुवाद

मैं बूढ़ा हूँ

अनुप्रास पेपरबैक्स
ISBN : 978-93-91371-76-0

प्रकाशक : अनुप्रास प्रकाशन
'धनेश्वरीधाम' इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मिथिला, मधुबनी बिहार- 847 211
वेबसाइट : www.anuprasprakashan.com
ईमेल : anuprasprakashan@gmail.com
मोबाइल : +91 8862977228

मैं बूढ़ा हूँ

प्रथम संस्करण : 2025
मूल्य : ₹ 250

आवरण : अनुप्रास इंडिजाइन
केंसिंग्टन प्रेस दिल्ली द्वारा मुद्रित।

MAIN BOODHA HOON
Translated by
RAHUL RAJ GUPTA
First Edition : 2025
Price : ₹ 250

समर्पण

पूज्य पिता जी स्मृतिशेष आचार्य विनोद कुमार गुप्ता (1962-2015) के श्रीचरणों में सादर भक्ति भाव से श्रद्धापूर्वक समर्पित !

— राहुल राज गुप्ता

आशीर्वचन

लेखन मेरे लिए एक प्रकार का श्रवण है। मैं नहीं जानता कि क्या सुनता हूँ, लेकिन सुनता हूँ। जब शुरु करता हूँ तो लेखन स्वत: होने लगता है। जितना अधिक लिखता, पढ़ता हूँ उतना रुचिकर होने लगता है। लिखने का कोई नियम नहीं है। हर बार भिन्न होता है। हर बार नई चुनौती होती है। लगता है कि प्रकृति और समाज की उपज लेखन है।

मैंने वृद्धों को देखा, सुना, समझा तो लिख दिया वृद्ध विषयक 162 कविताएँ। सभी का शीर्षक एक है पर अभिव्यंजित मन: स्थितियाँ और प्रेरणा के बिन्दू एक नहीं हैं। मुझे अनुभव होता है कि सर्जनात्मकता ही आयु से वृद्ध को बूढ़ा होने से बचाता है।

एक दिन मुझे अज्ञात नम्बर से फोन आया कि मैं 'हम बूढ़ छी' पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद करना चाहता हूँ। यदि आपकी अनुमति हो तो। यह सुनकर मुझे अद्‌भुत प्रसन्नता हुई। मैंने पूछा- आपका क्या नाम है? उत्तर मिला- राहुल राज गुप्ता। मैंने सहर्ष अनुमति देते हुए कहा मैथिली पुस्तक के पाठकों का क्षेत्र सीमित रहने के कारण अनुस्यूत भावनाओं का प्रसारण अन्य भाषाओं तक नहीं हो पाता है। इसे आप हिन्दी भाषा के जरिये विपुल पाठकों तक पहुँचाने का काम करेंगे जो सराहनीय होगा। मैंने भी पुस्तक लेखन का कार्य अनुवाद से ही प्रारम्भ किया था।

माँ सरस्वती की असीम अनुकम्पा से मुझे सैकड़ो पुस्तक का लेखक, अनुवादक, सम्पादक आदि होने का सौभाग्य प्राप्त है।आपने भी लेखनारम्भ अनुवाद से ही किया है, इस विधा में गहरी अभिरुचि के कारण आप निश्चय ही प्रख्यात् लेखक बनेंगे। ये मेरा आशीर्वचन है। लेकिन इसके लिए आपको विश्व के विभिन्न भाषाओं की चुनिन्दा पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए। अध्ययनशील रहना चाहिए।

(इन्द्रकान्त झा)

पूर्व अध्यक्ष मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
पूर्व निदेशक संस्कृत एवं मैथिली अकादेमी, बिहार सरकार

03.02.2025
पटना।

शुभाशंसा

अनुवाद कार्य एक कला है। इस कला के मर्मज्ञों द्वारा किसी एक भाषा-साहित्य के रचनाओं से निहित तथ्यों एवं भावों का दूसरे भाषा-साहित्य के माध्यम से उपस्थापन ही अनुवाद कार्य है। स्पष्ट है कि अनुवादक को इस कार्य हेतु दोनों भाषा साहित्य का सम्यक ज्ञान रहना आवश्यक है। किसी भी समाज का स्वरुप उसके साहित्य अध्ययन से परिलक्षित होता है। साहित्य में समाज की बोलियाँ, संस्कृति, सभ्यता, उत्थान-पतन आदि का जीवन्त चित्र स्पष्टतः झलकता रहता है। इस अर्थ में भी अनुवादक काफी सजग रहता है अपने कार्य के दौरान। स्थान भेद के कारण बोली और भाषा का बदलना स्वाभाविक है। मैथिली में गोबर से बने जलावन में प्रयुक्त ठोस पदार्थ को 'गोइठा' कहा जाता है, जबकि हिन्दी में इसे 'उपला' के नाम से जाना जाता है। अतः अनुवादक को एक ही वस्तु के लिए उसके दोनों भाषाओं में प्रयुक्त नाम-ज्ञान रखना आवश्यक हो जाता है। जब कोई अनुवादक साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद करता है तो उस रचना में अनुस्यूत भावों का उपस्थापन अन्य भाषाओं में करने के लिए साहित्यिक ज्ञान के अतिरिक्त वहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का ज्ञान रखना, साथ ही समकालीन परिवेश, भाषायी अवबोध, सूक्ति, मुहावरा, लोकोक्ति आदि का यथावसर प्रयोग करने से भावों का उपस्थापन सहज और विश्वस्त हो जाता है।

श्री राहुल राज गुप्ता मैथिली भाषा-साहित्य के शोध-गवेषक हैं। प्रो० (डा०) इन्द्रकान्त झा रचित 'हम बूढ़ छी' नामक काव्य-संग्रह का इनके द्वारा हिन्दी में अनुवाद किया गया है। सौभाग्य से श्री गुप्ता हिन्दी भाषा का अध्ययन छात्र-जीवन में बखूबी किये हैं। ये जिज्ञासु प्रवृत्ति वाले व्यक्ति तो हैं ही, अध्ययन कार्य में ऊर्जा का नियमित उपयोग करना इनका स्वभाव है। अनुवाद कार्य में इनकी विशेष अभिरुचि होते हुए भी यह इनकी पहली अनूदित कृति है।

मेरा अशेष आशीष इनके साथ है। ये चिरंजीवी हों एवं अध्ययनशील रहते हुए साहित्य क्षेत्र में नित्य नये कीर्तिमान स्थापित करें।

डा. सुरेन्द्र भारद्वाज
सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग
सी. एम. कॉलेज, दरभंगा
(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा)

-

दो शब्द

आज के समाज में यदि कोई उपेक्षित है तो वह बूढ़ा है। बुढ़ापा उम्र का वह हिस्सा है, जब पुराने पत्ते नई कोंपलें को रास्ता देने की तैयारी प्रारंभ कर देती हैं। उम्र के आखिरी लम्हों में जिस्म और उससे जुड़ी दुनिया सूरज के ढलने जैसा होता है। बूढ़ा जो शारीरिक रूप से अशक्त और मानसिक रूप से शिथिल हो जाता है; ऐसी अवस्था में उसे वर्तमान भौतिकवादी युग में अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। डॉ० इन्द्रकान्त झा ने वृद्धों के जीवन का बारीकी से अनुभव किया है और इसे काफी नजदीक से देखा है। डॉ० झा अपने दीर्घ कालिक जीवन में अनेक समस्याओं से घिरे बुढ़ापा को भोग रहे व्यक्तियों से सम्पर्कित रहे हैं। उनकी वेदनाओं से अभिभूत होकर उन्होंने अपनी मातृभाषा मैथिली में उसे स्वर दिया है, अभिव्यक्ति दी है। इस पुस्तक का नाम ही रखा गया है— 'हम बूढ़ छी'। विश्व के किसी भी साहित्य में वृद्ध पर इतना विस्तृत विमर्श करते हुए एक स्वतंत्र पुस्तक की रचना देखने को नहीं मिलता है।

इनकी यह रचना मातृभाषा मैथिली में लिखे होने के कारण इसका आनन्द मैथिली भाषियों तक ही सीमित हो जाना स्वाभाविक है। जब यह काव्य-संग्रह मेरे समक्ष आया तो मैं इसे पढ़कर इससे काफी अभिभूत हुआ। फिर मैंने निर्णय लिया कि इसे हिन्दी में अनूदित करूँ, जिससे इसके महत्त्व का लाभ अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचा सकूँ। समाज का युवा वर्ग जिनसे बूढ़े उपेक्षित हो रहे हैं, यह सोचने को विवश हो कि अभी वे युवा हैं, प्रौढ़ हैं, पर आने वाले समय में वे स्वयं भी बूढ़ा होंगे। उन्हें भी ऐसी ही वेदनान्तक परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। वे इससे अभिभूत होकर बूढ़ों की दशा की ओर ध्यान देंगे। इस पुस्तक को पढ़कर यदि थोड़े से भी पाठक इससे प्रेरित हुए तो मैं अपना कार्य सार्थक समझूँगा।

लेखक डॉ. झा वृद्ध की दुर्दशा को निवेदित करते हुए लिखा है— पहिने हम/ चान सुरुज रही/ पहाड़ आ सागर रही/ चानीक पात पर/ सोनाक लिखल/

आखर रही/ लोक कहै छल/ अलखक चान रही/ समय बदलल/ भीतर-भीतर/ अनुभव भेल/ हम खण्डहर छी/ रोज आब हम/ धिया पुताक वाणी केर /जहर पीबै छी/ सर्प-दंश सहै छी/ तँ मोन कहैए/ सुति रही/ चिरनिद्रा मे।

उक्त वेदनाओं को वृद्धजन काफी- कुछ अर्थों में भुगत भी रहे हैं। यह एक अनुपम पथ प्रदर्शक होगा वैसे लोगों के लिए जिसे लगता है मैं सदा युवा रहूँगा 'कुन्ती' की तरह। पर जब उन्हें किसी वृद्धाश्रम का सहारा लेना पड़ेगा तब यह पुस्तक उनके दर्द पर लगे मलहम का काम करेगा। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक को पढ़कर वृद्धजनों की स्थिति में अपेक्षित सुधार की प्रबल संभावनाएँ जगेंगी।

इस पुस्तक (मैथिली संस्करण) के रचयिता मैथिली भाषा एवं साहित्य के शलाका पुरुष परमादरणीय प्रो० (डॉ०) इन्द्रकान्त झा जिनके इस महती ऐतिहासिक कृति से मैं प्रेरित हुआ और अनुवाद कार्य सम्पन्न किया; पुस्तक के हिंदी अनुवाद करने के लिए मुझे सहर्ष अनुमति प्रदान की एवं सम्पूर्ण अनूदित काव्य का सूक्ष्म एवं गहन अवलोकन भी किया; मुझ पर भरोसा जताने के लिए मैं उनका ऋणी हो गया हूँ।

किसी भी अनूदित काव्य-पुस्तक का पुनरीक्षण खास कर अनुवाद के प्रसंग में महती कार्य माना जाता है; इस कार्य हेतु आदरणीय गुरुदेव-सह-पर्यवेक्षक(पी-एच० डी०) डा० सुरेन्द्र भारद्वाज (सहायक प्राध्यापक, सी. एम. कॉलेज, दरभंगा) का आभारी हूँ जिन्होनें इन कार्यों में अपना किमती समय निकालकर मुझे मार्गदर्शित करता रहा। विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना०मि०वि०, दरभंगा के वरीय प्राचार्य परमादरणीय प्रो० (डॉ०) अशोक कुमार मेहता का भी आभारी हूँ जिन्होनें मेरे इन सभी कार्यों का अवलोकन कर मुझे अनुगृहीत किया।मित्र का सहयोग हो और उनके प्रति स्नेह प्रकट न करुँ ऐसा हो नहीं सकता। कविताओं में अनुस्युत भावनाओं का हिन्दी अनुवाद को ठीक से सुनने और समझने के लिए मित्रों ने अपना वेश कीमती समय देकर मेरा सहयोग किया, उत्साहवर्धन किया। अत: विशेष रूप से मित्र-सहपाठी मनोज कुमार पंडित (जे० आर० एफ०) के प्रति अशेष स्नेह। इन सभी के साथ ही साहित्य के क्षेत्र में क्या?, क्यों? और कैसे? इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर-मार्गदर्शन के लिए आदरणीय डॉ० मेधाकर झा(पटना) के प्रति विशेष आभार!

अन्त में इस पुस्तक के प्रकाशन में अपार सहयोग के लिए हमारे अग्रज श्री दीप नारायण 'विद्यार्थी' जी का कोटि-कोटि आभार।

— राहुल राज गुप्ता

1. बूढ़ा

वृद्धावस्था में लग रहा हमें
मैंने जी लिया
अपना सारा जीवन
समझ गया हूँ
जीवन का अन्तिम चरण मरण
ओ मृत्यु! ओ मृत्यु!
आ जाओ, आ जाओ
करो अभिलाषा
मुझमें ही पूर्ण
मैं जीवन भर
तुम्हारे साथ जूझता रहा हूँ
जीवन रूपी नौका में
सुख-दु:ख को लाद
विलीन होने को
तुम में मिलने को
तुम्हारी दी धन-सम्पत्ति
तुम्हें ही अर्पित कर
खाली हाथ लिए
आ गया हूँ
ओ मृत्यु ! ओ मृत्यु!
कब तुम्हारी दृष्टि पड़ेगी
उसी आस में बैठा हूँ
ओ मृत्यु ! ओ मृत्यु!

2. बूढ़ा

मैं जर्जर वृद्ध हो गया हूँ
जीवन पिचड़ा-पिचड़ा बन गया
समझ में आया
जीवन पंछी उड़ जाएगा
घोसला टुकड़े-टुकड़े होगा
हम जायेंगे सूर्यास्त के पार
पृथ्वी पर अतिथि बन कर
रहे हम बहुत सारे दिन
ऋतु-ऋतु का परिवर्तन भोगा
भोग की तृष्णा हुई समाप्त
लगा
समय वह आ रहा है
बैसाख की झंझावातों में
कंठ हमारे सूख जायेंगे
कोई न मुख से स्वर निकलेंगे
अस्ताचल के पार चले जायेंगे
जहाँ न आगे मार्ग मिलेंगे।

3. बूढ़ा

वृद्ध हूँ
क्या करूँ
सोचा
पोते पोतियों को खेलाउँगा
खुद भी खेलूँगा
बहू पास भी न आने देती उन्हें
नाती-नतिनी के साथ खेलूँगा
वे तो बेटी का धन है
कहते भी हैं तो
बोलती है सभी पढ़ते हैं
अकेला हूँ
बात करूँगा
किसके साथ
पड़ोसियों के साथ
नौंकरी-पेशा वाले हैं
देखते भी नहीं हैं
वृद्ध हूँ
वृद्ध के यहाँ
जाने के लिए व्यग्र रहते हैं
पत्नी जाने भी नहीं देती
जायेंगे तो गिर पड़ेंगे
गिरेंगे तो
हमेशा के लिए बेटे का घर
बन्द देखेंगे।

4. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
रहता हूँ कैसे
जीता हूँ कैसे
कौन पूछेगा
लथ-पथ लहू लुहान
बीच रास्ते पर लुढ़का हुआ पड़ा था
पुलिस ने देखा
लेकर आयी अस्पताल
डॉक्टरों की जमघट बैठी
अब मेडीसीन के डॉक्टर करेंगे इलाज
अथवा सर्जन करेंगे
अथवा मनोवैज्ञानिक
अथवा होमियोपैथिक
अथवा यूनानी
अथवा नेचुरोपैथी से होना है इलाज
निर्णय कुछ नहीं हुआ
किसी को चिन्ता कहाँ है
समाज कराह रहा है
या कोमा में है
कहाँ कोई देख रहा!

5. बूढ़ा

बूढ़ा घर से भागने को
ढोंग रचते हैं
रच नहीं पाते हैं
खोंचारता है बेटा
बात-बात पर टोकती है बहू
अंग्रेजियत दिखाते हैं पोते
फ्रेंच की लाठी चलाती है पोतियाँ
पाँव भी आगे बढ़ाती हैं
लेकिन
खटिया पर लेटी बुढ़िया
पानी के लिए कराहती
दवा के नाम पर मात्र गंगाजल
धूप के लिए चौरा तुलसी का
वही लेटी बुढ़िया
देखती है आगे में सतंजा
लगता है अन्न सातों नागराज
अचानक नाग डँसने को तत्पर
बाँ-बाँ करती बाछी
बुढ़िया नहीं पकड़ना चाहती है
बछिया की दुम
मैं निछक्कस बूढ़ा हूँ
आँखे रहते हुए भी अन्धा हूँ
दो कान रहते भी बहरा हूँ
जुवान युक्त गूँगा हूँ।

6. बूढ़ा

बूढ़ा हो गया
जो हरा विशाल
वरगद का पेड़ समझता था
अब समझता हूँ
ठूठा कोकना वृक्ष
जो पहले
शरीर से चमगादड़ जैसे
लटका रहता था
वह ! दूर से ही बोलता है
आप बहरघरा को छोड़ कर
गोशाले में ही रहिए।
बिना काम का जीवन
अपाहिज हो जाएगा
अपना काम
स्वयं से ही कीजिए
बहू के चूल्हे से
मतलब मत रखिये
अपने जीवन की नाव
स्वयं ही खेबिए।

7. बूढ़ा

जन्म लिया
समझ रहा था
जीवन सुख का पहाड़ चूमेगा
चलता भी रहा
कुछ इसी तरह
परन्तु
जब बूढ़ा हुआ
तो लगा
जीवन
प्रकाश-अन्धकार रूपी
जीवन की दूरी को नाप रहा।
सुख के बदले में
दु:ख के झूले पर झूल रहा
समय ढो रहा जीवन
या समय का भरिया बनकर
बूढ़ा ढो रहा जीवन
अचानक
समय लगा ठहरा हुआ
समय गुजरा या जीवन
वही समझ नहीं पाया।

8. बूढ़ा

समय के चक्र से गुजरा सारा जीवन
अब हो गया हूँ बूढ़ा
अब काम नहीं देता
कोई अन्तहीन समय
फैला हुआ देखता हूँ
पाँव न तैयार है कहीं चलने को
साथ नहीं देता है मन भी
आगे-पीछे सूना-सूना सा लगता है
अपनों में अपने को ढूँढ़ता हूँ
विचार और स्मृति के धागे से
जीवन की चादर बुनते हैं
खुद ही ओढ़ते हैं
कब और कैसे फटता है
वही नहीं समझ आता है।

९. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
अदहन जैसा मन खौल रहा है
समय गुजरता नहीं
पहाड़ बना जा रहा है
खोजते हैं लोग
आदमीनुमा लोग मिलते हैं
संवेदनहीन समझकर
आगे की राह पकड़ता हूँ
लोग नहीं मिलते
लगता है जैसे
लोग दाल के जैसे ही
गलते जा रहे हैं
सुख-दु:ख के विस्तर पर सोते हैं
या जागे रहते
समझ नहीं पाता हूँ
मैं बस मृत्यु को देख रहा हूँ।

10. बूढ़ा

जब बूढ़ा हुआ
तो देखा जीवन को
निराशा के वृक्षपर लटका हुआ
सुबह के सूर्य के मुँह में
दिखा आग का गोला
जब वह दिन रात
चलता ही रहता है फिर भी
बूढ़ा नहीं होता
सोचते ही हम
हो गये युवा
नतमस्तक हुई मन की व्यथा
जीवन मेरा
उत्साह उमंग का
भरिया बन गया।

11. बूढ़ा

बूढ़ा होने पर
हमें लगा
मैं किसी वृक्ष से लटका हुआ
पीला पत्ता हूँ
या धरती पर गिरा हुआ फूल हूँ
या ठंढी हुई चाय ?
वा टूटा-फूटा शीशा हूँ
या बिना पंखों की चिड़ियाँ
वा टूटा हुआ चश्मा
मैं जो हूँ सो हूँ
पर लगता है हमें कि
दूसरे के कन्धे पर
हथेली रखे हुए
लाठी के बल
चलनेवाला मानुष हूँ।

12. बूढ़ा

हो गया हूँ बूढ़ा
अकेले की जिन्दगी
असुरक्षा और
अविश्वास का घर बना
जिधर ही नजर पड़ी
अविश्वासियों को ही देखा
मानसिक संत्रास में पड़ा
पुरजन-परिजन से दूर रहा
परन्तु रात में
मृत्यु के भय से
थर-थर काँपता रहा
जिन्दगी कैसे कटे
उसी की खोज में रहा
आनन्द के बदले में
दु:ख की नदी में
उब-डूब करता रहा।

13. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
तो लगा हमें
स्मृति और पुराण
स्वप्नवत् हुआ
वृद्ध शब्द सुनते ही
हृदय की धड़कन बढ़ गई।
निःसत्व शब्द बन गया
मेल मिलाप का जीवन
लगता नदी में बह गया
शरीर का रक्त
पानी हो गया
जीवन
घिसे हुए सिक्के जैसे बना
अनुभव हुआ
निःसत्व जीवन
जीवन से मुक्त हुआ...।

14. बूढ़ा

पापा जी
आप बूढ़े हो गये
उससे हमें क्या मतलब
आप छोटे क्यों हो गये
आप छोटे हुए तो ठीक
इतने दुबले क्यों लगते हैं
मैं आपके हाथ मे झूला नहीं झूला
आप किसी से कुछ नहीं चाहते हैं
न तो कुछ माँगते हैं
टुकुर-टुकुर देखते हैं
रोटी-दूध खाते हैं
खुरचन से पानी पिते हैं
इतना ही नहीं
आप इतने क्यों झुक गये
कि बच्चों सा लगते हैं
आप बूढ़े हुए या दुर्बल
कोई मतलब न रखता हूँ
आप बच्चों जैसे क्यूँ लगते हैं
कोई जवाब क्यों नहीं देते हैं...।

15. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
फटेहाल जीवन
गली-गली और
आँगन-आँगन भटकता हूँ
पेट की आग
बुझाता हूँ
बेटा-बेटी
मेरी ओर देखता भी नहीं
लगता है जैसे
परम्परा धराशायी हुई
नहीं बचेगा अब
कुल-गोत्र और वंश
भिखमंगे बाप-दादे का
कोई नाम नहीं लेगा...।

16. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
तो विलुप्त हुआ घर
नजर से दूर हुआ आँगन
कोसो दूर गई मुस्कान
रूआँ-सा मुँह हुआ
बेटा-बहू का कब्जा हुआ
पत्नी के साथ
हमें वृद्धाश्रम ले गया
वृद्धाश्रम में दोनों पति-पत्नी
दिन भर करते हैं काम
पेट की भूख शांत करता हूँ
सुख-दु:ख में एक-दूसरे का
बनते हैं अवलम्ब
किसी तरह जीवन का करते हैं गुजारा

17. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
तो लगा
बाल-बच्चे काल हैं
जीवन में प्रलयकाल के मुँह में
स्वयं को देखकर डरता हूँ
खुली आँखों में
कराहता जीवन देखता हूँ
बेटा का आज्ञाकारी बनता हूँ
फटा-चिटा जीवन जीता हूँ
लगाकर मुँह में ताला
बहू की आज्ञा से
पोता-पोती के साथ खेलता हूँ
पेट की आग बुझाता हूँ
गुदरी-चेथरी ओढ़ता हूँ
अपने ही घर में मैं
कैदी का जीवन जीता हूँ।

18. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
काम न देखता है कोई
जपता है हर-पल माला
मन से या बे-मन से
कभी-कभी
काशी, मथुरा और
चारों धाम
गैरेज को ही समझता हूँ
अपने खून-पसीने से खरीदी
गाड़ी पर दूसरे को बैठा देखता हूँ
दु:ख-सन्ताप और पीड़ा को
रो-विलख कर मिटाता हूँ
जीवन में मृत्यु को खोजता हूँ।

19. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
एकाकी जीवन में
कभी गाता हूँ गीत शांति के
कभी रोता हूँ विरह में
तो कभी हँसता हूँ खुद पर
ढूँढ रहा हूँ जीवन की राहें
अचानक भूख से पेट कुड़बुड़ाया
सभी नाटक बन्द करो
व्यवस्था करो भोजन की
भोजन बनाता हूँ
नमकीन हुआ
या तैलीय हुआ
वह भी नहीं समझता हूँ
इलाके में भोज का नाम सुनकर
बिना निमंत्रण, बिना बुलावा
भोज खाने दौड़ता हूँ
नाक अपना कटबाता हूँ
अपमान की गठरी सर पर लिए
पेट की भूख मिटाता हूँ।

20. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
मेरे ही कमाई पर बाल-बच्चे
ठोकते हैं महराई
हलवा-पूरी उड़ाते हैं
मुझे भीख मांगने को विवश करते है
मान-प्रतिष्ठा छोड़कर
भीख मांगता हूँ
किसी तरह से गुजर करता हूँ
जिस दिन याद आती है मर्यादा
ध्यान पर आती है
बिना भीख मांगे रात भर
मान मर्यादा की माला खटखटाता हूँ
रात होती है दुर्घट जाड़े की
कौन देगा रजाई-कम्बल
किसी के अंगीठी पर बैठता हूँ
आग बुझने तक
अपनी मड़ई में फिर घुसता हूँ
हमें न है कोई यजमान
न कोई दानी, देने को दान
आता है मेरे घर की ओर
इस लिए धूप खिलते ही
फिर भीख मांगने को दौड़ता हूँ।

21. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
अपने को
लोभ मोह के
बन्धन में
बँधा हुआ देखा
मैंने बुढ़ारी जीवन
जी कर देख लिया
परेशान हूँ जीवन से
हे भगवान!
तुमसे याचना मुक्ति की
करना चाहता हूँ
बाधक है अंहकार
लगता है जैसे
तेरे आगे घुटना टेकने से
मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होगा
तेरे द्वारा ही लाया गया
तेरे साथ सत्य के धाम
चाहता हूँ पहुँचना।

22. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
बुढ़ारी में लगा
बदल रहा गाँव
बदल गए सभी रीति-रिवाज
जीवन शैली सभी बदल गये
सम्बन्ध-समाज के लोग बदल गये
जिधर जाता हूँ
सुनता हूँ दुत्कार ही
इतस्तत: में पड़ा हूँ
कहाँ जाऊँ
अवलम्ब पाऊँ
अवलम्ब हमारी ओर
अब नहीं झाँकता
उल्टा डाँटता है
लगता है जैसे
घर बाहर के लोग
संवेदनहीन है
बूढ़े का जीवन कैसे चलेगा
डूबा रहता हूँ इसी चिंता में
पढ़ा-लिखा मनुष्य हूँ
समझता हूँ
चिन्ता मानव को जलाती है
चिन्ता से त्राण के लिए
मृत्यु की राह ढूँढता हूँ।

23. बूढ़ा

बूढ़ा होने को आया
बुढ़ापा दौड़ा
सम्पूर्ण शरीर को घेर लिया
तो लगा
हम से वृक्ष के
पत्ता जैसा
कुछ झर रहा है
देह काँप रहा है
मन की चंचलता
शान्ति पथ का पथिक बना
पैरों का गति मन्द पड़ा
माया ने विकराल रूप धारण किया
बाल-बच्चों से कलह हुआ
घर से निकाल दिया
मैं अनाथालय में
मृत्यु की राह ढूँढ़ रहा हूँ।

24. बूढ़ा

मैं बूढ़ा व्यक्ति हूँ
चकनाचूर हुआ हूँ
झुक गया हूँ
किन्तु लगता है
कामनाशक्ति और समय का मारा हूँ
मंद-मंद गली-कुचे में भटकता हूँ
और दु:ख से पीड़ित हूँ
काटता है घर अपना
यौवन आता नहीं पास
अन्यमनस्क हूँ
स्वप्नलोक में जीवन की जीवन्तता ढूँढता हूँ
अपना निरोगी ऐन्द्रिक मन
भटक रहा इधर-उधर
लौटकर चेतना बताती बूढ़े हो
वही वृद्ध जीवन जीता हूँ।

25. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
बैठा हूँ अकेला
सोचता हूँ विचारता हूँ
अखबार पढ़ता हूँ
या जीवन ढूँढ़ता हूँ
देखने पर लगता है
आनन्द का जीवन
थोड़े ही दिन रहा
जानता हूँ मैं
वयोवृद्ध हूँ
वृद्धापन में करता हूँ अनुभव
फिर याद आती है
कल ही तो युवा था
जवानी ढूंढने को
आफन तोड़ता हूँ
व्याकुल-छटपटाता हूँ
चारों ओर बुढ़ारी ही दिखती है
मर्माहत होकर धरती पर
कटे वृक्ष जैसा
धड़ाम से गिर जाता हूँ...।

26. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
जैसे लगता है
जरायमान देह में
बैठी हुई है वृद्धों की आत्मा
कितने लाचार हैं
बेचारे
जर्जर जीवन को
थके-हारे ढोता रहा हूँ
कभी-कभी काँप जाता हूँ
फिर भी मृत्यु के भय से
काया से प्रेम करता हूँ
किन्तु अस्त-व्यस्त और
असंगत से जीवन में
आत्मा शरीर में बैठा है
जीवन-मृत्यु के बीच जुझता हूँ।

27. बूढ़ा

आप साथ आये मेरे
आये तो हमें
आपने महाराजा
खुद को महारानी
जैसे-जैसे समय बीता
वैसे-वैसे जीवन के साथ
समाज की पुस्तकें
आपने पढ़ी
या मैंने पढ़ी
कहाँ क्या मिला
अनुभव कौन सुनेगा ?
वृद्ध हुआ मैं
आप हुई बूढ़ी।
जीवन की
पुस्तक का पृष्ठ पलटा
मरने का आमंत्रण आया
बगुला के जैसे
दोनों ध्यान लगा कर बैठे
मृत्यु को ढूँढ़ता हूँ।

28. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
कभी युवक सा लगता हूँ
तेज चलते समय
धरती मैया को चूमता हूँ
कभी खुद को
बच्चा समझ कर
माँ की गोद में देखता हूँ
माँ दुलारती है, पुचकारती है
पूछती है
क्यों रोते हो
क्या नाम है?
वृद्ध भूलता है अपना नाम
चुपचाप
मुलुर-मुलुर देखता है।

29. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
अनागत भय से
घबराया हूँ
जीवन के रहस्यों को
रहस्य ही रहने देना चाहता हूँ
ज्ञानी रहते हुए भी
मूर्खों सी बातें करता हूँ
खुद ही स्वयं को
न जान पाता हूँ
क्या बोलता हूँ
कहाँ बोलता हूँ
वह समझ नहीं पाता हूँ
जब तक समझता हूँ
तब तक, सबका दुत्कार सुनता हूँ
अच्छे-बुरे में
अन्तर नहीं दिखता है।
खुद स्वयं में
व्यस्त रहता हूँ
जैसे लगता है
मैं मृत्यु की राह पर चलता हूँ...।

30. बूढ़ा

वृद्ध को
कल का सूर्य
करने को कुछ काम
जगा रहा था
आज के सूर्य को
उसके जीवन से
कोई न मतलब है
जिसके डर से
घर के लोग
ले लिया था पतनुकान
जी हजूरी करने को
तत्पर रहता था
वे ही लोग बूढ़े से
मखौल करते थे
भोजन मांगने पर
कोई कहता था
इस बूढ़े को
दैत्य का खोदा हुआ पेट है
जितना ही मिलता है
उतने से ही
जीवन खेता है
अपने घर में
बहरा, गूँगा बनकर
वेदना सहता रहता हूँ

31. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
याद आया
अनाथ बचपन
दिशाहीन
हतप्रभ जवानी
थका सा जीवन
असहाय बुढ़ापा
दु:ख ही दु:ख तो कुछ नहीं
लगा जैसे
अपना दु:ख तो कुछ नहीं
दूसरे का दु:ख
सागर सा लगा
मन को शान्ति मिली
दुख में ही सुख का अनुभव हुआ।

32. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
स्वजनों का फेका हुआ
सुबह का अखबार हूँ
परिजन के लिए
कोविड 19 हूँ
स्वयं के लिए भी
जीवन का जंजाल हूँ
लग रहा है
जीवन कराह रहा
जीने से अच्छा लग रहा
मृत्यु की शरणागति।

33. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
लगा जैसे
कि जीवन
जवानी के उत्कर्ष में
सब पर अपना
धौंस जमाया
न्याय-अन्याय का
भेद-भाव मिटाया
उसी जीवन का
होने लगा
शरीर जर्जर
आयु का दुष्प्रभाव
जब दिखने लगा
जो बोया
जीवन भर
जीवन की फुलवारी में
झर-झर झरने लगा
शब्द हुआ मौन
मन बोला
सो जाएँ
चिरनिद्रा में।

34. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
अब घिसकता हूँ
जवानी खोजता हूँ
नहीं मिली
बचपन खोजता हूँ
स्वप्न में भी नहीं देखता हूँ
देखता हूँ
काया में लटकी हुई झुर्री
किसका है
मेरा ही है
नहीं,
किसका है
लगता है
मृत्यु की है...।

35. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
लगता है
भागते-दौड़ते, विलमते
जिन्दगी स्वयं ही स्वयं को
ढूंढ रही है,
अजीब हुई जिन्दगी
भीड़ के बीच में
खोज रहा अपनी जिंदगी
अनमोल जिंदगी
सस्ते से सस्ती हुई
सम्बन्धों की तराजू पर
कचड़ा के मोल बिक रहा
समाज नाक घुसा-घुसा
मस्ती से देख रहा ...।

36. बूढ़ा

वृद्ध हूँ
त्रस्त हूँ वृद्धावस्था की दुर्गति से
बेटा किसी का करता है बाहर घरसे
किसी की बहू लुकाठी से मारती है
बुढ़ा अनाथालय में
लेकर शरण जीवन चलाते हैं
कोई मांगकर भीख
गुजारा कर रहा है
मृत्यु की राह देखता है
किसी बूढ़े को धन के कारण
बेटा-बेटी पीट-पीटकर
मारता है धन के लिए
सम्पूर्ण परिवार
अब चखता है खिचड़ी जेल का
कुछ बूढ़ा होता है तत्पर तो
पेन्सन के बल पर
वृद्धाश्रम में मौज करता है
वृद्ध-वृद्धा से शादी कर
हनीमून पर जाता है।
किन्तु लगता है
बूढ़े का जीवन हो रहा निकृष्ट
कभी बूढ़ी को मार-पीटकर
सब कुछ है छीनता
कोइ आगे बढ़ बचाता है बूढ़े को

अखबार के समाचार से चलता है पता
अब तो बूढ़ा-बूढ़ी के शरीर पर भी
गुंडा आवारा थूकता है
सभी रह जाते हैं देखते
इतना ही नही
कुछ बूढ़े तंग होकर
कर लेते है आत्महत्या
कुछ बूढ़े बेटे के व्यवहार से
दु:खी होकर
सेवक को ही
धन-सम्पति दे कर
मृत्यु की राह पकड़ता है
परन्तु, हे भगवन!
बूढ़े का जीवन चलेगा कैसे
करिये उसका उपाय।

37. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
सोचता हूँ
मित्र लोग गये कहाँ
आता तो बातचीत में
बुढ़ारी जीवन सुख से कटता
कभी साथ में शिमला जाता
कभी अमरनाथ, जगन्नाथ
कहाँ गया कौन
किसी का नहीं पता-ठिकाना
सभी होंगे परेशान बिमारी से
कुछ गैस्ट्रीक कुछ मधुमेह से
कुछ धड़कन कुछ बी0पी0 से
कहता है डॉक्टर यह मत खाओ
ये मत खाओ ऐसे मत रहो
यहाँ मिलता तो कुछ नहीं
खायेंगे क्या अल्हुआ-सुथनी
यहाँ हाल-चाल तो पूछता नहीं
काम का ही संसार है
काम पड़ने पर आते थे लोग
अब तो कोई देखने भी आता नहीं
बाल-बच्चे अब गार्जियन हैं
जीवन जैसे-तैसे चलता है
पर लगा रहती है हर पल
भविष्य की चिन्ता।

38. बूढ़ा

हुआ वृद्ध
कुछ सूझता नहीं
एकान्त जीवन में
चुपचाप थे
समझ में आया
यह चुप्पी भीतर ही भीतर
खुद से बातें करता है
और कहता है देखिए
खुशी की नदी हँस रही
कल-कल करती बढ़ रही आगे
उन्मुक्त गगन में गा रहे पर्वत
शेष जीवन जीने का शलिखा ढूँढ़ लिया
गीता-रामायण, भागवत
पढ़ने लगा
फिर बुढ़ारी धर्म के राह पर
चलने लगी द्रुत गति से
आगे की राह मे प्रसन्नता
स्वतः दौड़ने लगी।

39. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
झुक गया हूँ
छड़ी के बलपर चलता हूँ
कहते हैं लोग
बूढ़ा आप झुककर
क्यों चलते हैं
मैं कहता हूँ
नहीं रे बाबू !
मैं झुक कर
ईश्वर को प्रणाम करते
चलता हूँ, देखता हूँ
वे मेरे साथ ही तो चलते हैं
हमें साहस देते हैं
आशावान बनाकर
आनन्दित करते हैं
मेरे साथ हमेशा रहते हैं
मेरे जीवन सम्बल बनते हैं।

40. बूढ़ा

वृद्ध हूँ
पहले दरवाजा रहता था भरा
चाय की केतली
चूल्हे पर ही चढ़ी रहती थी
अचरज लगता है
अब कौए भी नही आते हैं
बुढ़ारी में अच्छे लोग
क्यों अकेले रहते हैं
जैसे लगता है
जीवन है कोरस गान
जिसमें सभी व्यक्ति गाते हैं
मैं अकेले ही गाता हूँ
खुद ही सुनता हूँ
दूसरा कोई नहीं सुनता है
सुनने वाला
मृत्यु के मुँह में गिरता है।

41. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
बुढ़ारी दौड़ने लगा
बेटा-बेटी को खोजा
किसी की कोई आहट नहीं पायी
निराश हुआ
पोता-पोती, नाती-नतनी को
छूना चाहा
किसी का कोई स्पर्श न हुआ
स्मृति-विस्मृत होने लगी
हृदय में अपने लोगों का फोटो देखा
परन्तु अपना फोटो
दूसरे के चेहरा सा लगा
आँखो से आँसू
टप...टप...टपका...।

42. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
बुढ़ारी को पछाड़ने के लिए
अपनी आखो में आह्लाद भरकर
होठों पर मुस्कान का रेघा फैला
बिना छड़ी के ही
कदम-कदम चलने लगा
कदम लड़खड़ा गया
साहस क्षीण हुआ
पता चला
वर्तमान सम्भालने के लिए
सत्य को नकारना असंभव
स्वत: कदम पीछे घिसका
दरवाजे का शरणागत हुआ
दरवाजे से ही अच्छी-अच्छी बातों से
बातचित करने लगा
जीवन जीने लगा
चिन्ता-फिक्र छूट गया।

43. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
उच्च सुनती है बहू
माँगते हूँ नाश्ता
आगे में रखती है सलाई
बोलता हूँ ये नहीं
सुनाने लगती है
भगवती का गीत
सुन लेता हूँ खाली पेट
कहता हूँ थोड़ा पानी दो
बोलती है सोनमा की दादी मर गई
मांगता हूँ जनेऊ
लाकर देती है खड़ाऊ
परेशान रहता हूँ
वो बहरी भी थी तो
जो बोलता था
वही समझती थी...।

44. बूढ़ा

पहले मैं
चाँद और सूरज था
पहाड़ और सागर था
चाँदी के पत्ते पर
सोने का लिखा हुआ
अक्षर था
लोग कहते थे
अलख चाँद थे
समय बदला
भीतर ही भीतर
अनुभव हुआ
मैं खंडहर हूँ
नित्य अब मैं
बाल-बच्चों की वाणी का
जहर पीता हूँ
सर्प-दंश सहता हूँ
तब मन कहता है
सो जाऊँ
चिर निद्रा में।

45. बूढ़ा

जीवन था मदमस्त
आज भीड़ में अकेला हूँ
रंग सभी अब बदरंग हुए
कोई न लगा अपना सा
रह-रह कर साँसों की गति
घटने-बढ़ने लगी
लगा मैं किसी भार से दबा हूँ
खुशी कहीं खो गयी
पता नहीं चला
दुखों का पहाड़ खड़ा हुआ
आखों में आने लगी
आँसूओं की धारा
तो मन कहता है
सो जाऊँ चिर निद्रा में।

46. बूढ़ा

मत पूछिए मुझसे
मैं क्या खाता हूँ
कैसे जीता हूँ
कहाँ जाता हूँ
जीवन से जीवन ने जैसे
मुँह फेर लिया है
मैं न जाऊँगा शीश महल
शीशा देख लेगा तो
मैं डर जाऊँगा
निरर्थक परेशान हूँ
परेशानी से त्राण के लिए
खोजने लगा हूँ राह
राह मिली तो
तन-मन और भी परेशान हुआ
तो बोला मन
क्यों न सो जाऊँ
चिर निद्रा में?

47. बूढ़ा

वृद्ध हूँ
युवापन का जीवन
जीवन से बातें करता था
अचानक लगा
जिजीविषा का किसी ने
पाँव तोड़ दिया
मैं लंगड़ा हूँ
अन्तश्चेतना की आँख
कमजोर हुई
त्याग दिया सभी
जीवन के साथी-सम्बन्धी
जीवन-दर्शन
लुप्त हुआ
फिर आँख-कान निस्तेज हुआ
तो मन कहता है
सो जाऊँ
चिर-निद्रा में।

48. बूढ़ा

वृद्धावस्था में
साँसे ठहर सा गया
चौकीदार बैठ गया
अचानक लगा जैसे कोई
साँसों के दरवाजे को खोल दिया
चौकीदार भाग गया
उन्मुक्त गगन में साँस लिया
समझ में आया धीरे-धीरे
साँसो की डोर
टूट कर जैसे
फिर खुद ही जुड़ रहा
स्मृति-विस्मृति का
शिकार हुआ
बाधित हुआ काव्य का
चिन्तन मनन
काव्य जगत में
मेरे लिए ताला लग गया
जीवन निरर्थक हुआ
मृत्यु की राह
खुल गयी।

49. बूढ़ा

वृद्ध अपने दु:ख को
भीतर ही भीतर गूँथ रहा
भीतर ही भीतर रो रहा
दूसरे बूढ़े के पास गया तो लगा
ये बूढ़ा कभी न हँसेगा
दुनियाँ की भाषाओं में
सांत्वना के दो बोल न मिले
लगा सांत्वना देंगे
बूढ़े जो दु:ख भोग रहे
वे छोटे हो जायेंगे
बेटा-बहू
बूढ़े की सभी सम्पति बेचकर
कहीं चले गये
बूढ़े की अंतर्वेदना
कोई न समझ सकेगा
न कोई हँसा सकेगा।

50. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
तो लगा हमें जैसे
सुखा पत्ता
सोचता है
हरदम जीवन
हरा नहीं
पीला भी होता है
वैसे ही हमें भी लगता है
जीवन हर पल
युवा ही नहीं रहता है
समय आने पर
बूढ़ा होता है
पत्ता जैसे
सुनसान स्थान पर रहते हैं
मैं बूढ़ारी से परेशान न होता हूँ
मैं बूढ़ारी में जवानी देखता हूँ
खुश रहता हूँ
मदमस्त रहता हूँ
मृत्यु का वरण करने के लिए
हमेशा तत्पर रहता हूँ।

51. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
वृद्धावस्था में
ऊर्जावान हूँ
आँख-कान ठीक है
पढ़ता हूँ
लिखता हूँ
कवि सम्मेलन में गरजता हूँ
हृदय मेरा है खूब मजबूत
कितने बूढों को
मैंने मरते देखा है
मैं डरता नहीं हूँ
कन्धा देता हूँ
आनन्द से रहता हूँ
मुझे न कोई बीमारी है
आज कल रह-रहा हाइ ब्लडप्रेसर
लो-ब्लडप्रेसर और डाइबीटीज
लोगों को करता है परेशान
पर मुझसे रहता कोसों दूर
मैं खूब प्रेम से मिठाईयाँ
चाभता रहता हूँ
आनन्द का जीवन बिताता हूँ।

52. बूढ़ा

वृद्ध हूँ
चाहिए न मुझको
दया किसी की
सहायता किसी की
मैं सक्षम हूँ स्वयं
सबेरे उठता हूँ
टहल-पहल कर
आता हूँ तो
कसरत करता हूँ
फिर नाश्ते में
अंकुराया हुआ मूँग-चना
और गेहूँ भी खाता हूँ
अपनी इच्छा से मनपसन्द भोजन
बनाकर खूब खाता हूँ
स्वाध्याय करता हूँ
प्रसन्नता का धौत वस्त्र पहनकर
गाँव-घर में घूमता हूँ
जब तक जीऊँगा
आनन्द से जीवन जीऊँगा
सभी दिन मोछ तानकर
जीवन का आनन्द लुटूँगा...।

53. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
अचानक लगा जैसे
कोई कह रहा है
देखिए बूढ़ा बाबा
जीवन के इस अँधेरे को
महसूस मत कीजिए
धैर्य रखिये
अँधेरों चारों ओर से
आपको घेर लिया है
मत घबड़ाइए
अँधेरों के बाद
उजाला होता ही है
आप भी जीवन में
प्रकाश पुंज को देखेंगे ही
जग में आये हैं तो
मृत्यु वरण करेगा ही
अतः निश्चिन्त रहें हे वृद्ध!

54. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
एक लावारिस, अनाथ
व्यक्ति हूँ
बेबस और लाचार हूँ
दु:ख से सूखी लकड़ी जैसा
चेहरे सूखा
लटकी हुई झुर्रियाँ
बना दिया बदरंग जीवन
एक निवाले अन्न के लिए
दूसरे का मुँह देखा कि
कभी ऐसा भी दिन आएगा
गिड़गिड़ाना पड़ेगा अन्न के लिए
लगा रहेगा दूसरे का मुँह देखते
आकाशवाणी हुई
हाँ आयेगा !
यमराज जिस दिन
सारे मुँह देखते रहेंगे
स्वत: ले जायेंगे।

55. बूढ़ा

हे ईश्वर!
बूढ़ा हूँ
बूढ़ारी की लाठी से
समय का जादूगर
पीट रहा, डेंगा रहा
हे देव!
थोड़ी देर के लिए ही
बचपना दीजिए
अबोधों के साथ खेलने दीजिए
समय का बोझा
उतारने दीजिए
हे भगवन !
भूले अतीत को
स्मरण में लाने दीजिए
वर्तमान की व्यथा से
त्राण पाने दीजिए
कुछ न माँगता हूँ
हमें मृत्यु की राह दिखा दीजिए...।

56. बूढ़ा

आया बुढ़ापा
तन-मन डगमग हुआ
जिसे अपना समझता था
वो पराया हो गया
संसार मेरा लघु हुआ
जिसको मदद की था
सताने लगे वे ही
अचानक गुरू का स्मरण हुआ
तो पर्दा माया का छूट गया
सोचा ! देखा तो लगा
यह जग ही माया है
मैं जो कुछ हूँ देखता
सभी हरय हैं झूठे क्षणभंगुर
गुरू की कृपा से ज्ञान बढ़ा
माया का किया विसर्जन
खुद को देखा
जग दूसरा था सत्य का
अनुभव हुआ
यह जीवन ही एक सपना है
अब नहीं अन्तिम यात्रा में
कोई भी संकट आएगा...।

57. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ सोचते विचारते
लगा मैं युवा हूँ
तेजी से लगा चलने
ठोकरों से गिरा
अब धरती को चूमता हूँ
कभी खुद को
बच्चा समझता हूँ
माता की गोद में पाता हूँ खुद को
हँसता हूँ
क्यों हँसता हूँ
कोई न कारण समझता हूँ
रोता हूँ
माँ पूछती है
क्यों रोते हो बाबू
खुद का नाम भी भूल जाता हूँ
माँ की गोद में
चैन से सोये
टक-टकी लगाकर देखता हूँ

58. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
अमूर्त खूशी
ढूँढ रहा हूँ
आगे में दु:ख को
मुँह बाये खड़ा देखता हूँ
पीटता हूँ उसे मन की चाबुक से
आगे बढ़ता हूँ
आत्मनिष्ठ होकर
साँसों की लय में
साँस मिलाकर
अनुलोम-विलोम
कपाल-भाँती आदि-आदि
योग की क्रिया-कलाप
करते रहता हूँ
जीवन के दु:ख-दर्दो को भुलाकर
आनन्द का जीवन जीता हूँ।

59. बूढ़ा

पहले जिन्दगी
कूद रहा था
फाँद रहा था
मस्ती में रहता था
बूढ़ा हुआ
जब स्वयं में
अपनी जिन्दगी को झाँका
लोगों के बीच में खुद को
अकेला देखा
चाँद तारे तोड़ने वाली जिन्दगी
गिरी मुर्झाए फूलों की तरह
लाचार हुई जिन्दगी
खुद में खुद की जिन्दगी देखी
दूसरों का दु:ख सागर सा लगा
अपना दु:ख तिनका
कलह से पीड़ित
लोगों के जीवन से
अपना जीवन अनुपम लगा।

60. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
लग रहा जिन्दगी
लुढ़क गई।
खुशी खोजने में
आतुर हुआ
पोता-पोती को
गोद में उठाया
खुशी में
नाचने गाने लगा
बहू को देखा
पोता-पोती को
नीचे उतारा
कुत्तों जैसा
दुम सुटकाकर
दरवाजे की ओर भागा।

61. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
बुढ़ारी को
भगवान की पहनाई
माला समझता हूँ
अकेले में अकेले का
आनन्द लूटता हूँ
भगवान का भजन करता हूँ
बुढ़ारी-जीवन
सुखमय गुजारता हूँ
हमें मृत्यु से कोई नहीं
भय लगता है।
इसलिए तो हमें
अनुभव होता है
मैं जीवन जीऊँगा।
दु:ख-सुख को भाई समझता हूँ
जब जो भाई आता है
उसी के साथ रहने में
हमें मिलता है सुकून
दु:ख में भी लूटता हूँ आनन्द।

62. बूढ़ा

बुढ़ारी में
अचानक
मेरे मुट्ठी में
जन्म हुआ
पता चला
सम्भावना का
जन्म हो गया
लगा
अप्रत्याशित
जीवन-दिशा का
उदय हो गया
मेरी मुट्ठी में
बुढ़ारी जीवन
जीने की कला का
जन्म हो गया...।

63. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
सबसे पहले हमें
बीमार होकर लेटे समय का
लेटा है अस्पताल में जो
चाहिए उसका इलाज
हमें भाइ-बन्धु चाहिए
हमें सबसे पहले
लोगों का प्रेम चाहिए
प्रकृति का सौन्दर्य चाहिए
और चाहिए शोषण मुक्त धरती
ईर्ष्या और द्वेष रहित समाज चाहिए
वृद्ध को और क्या चाहिए
आनन्द मय जीवन चाहिए।

64. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
बेकाम हूँ
कामना पीछे छूट गई
कैसा है
जो हमसे टूट गया
फिर भी मन में दीपित होता
काम करने की
क्षमता बढ़ाने के लिए
संकल्प करूँगा
बढ़ेगा अपना विश्वास
सूर्य चन्द्र से ऊर्जा मिलेगी
उर्जस्वित होते रहेंगे
बूढ़ा हूँ का बोध मिटता रहेगा
जीवन को जीवन का भरिया
ढोता चलेगा...।

65. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ हूँ
कोइ न मिलता है
जिसे करेजे में सटाकर
रखता हर पल साथ
जीवन का सारा सुख पाता
बाहर जाता हूँ।
धूप देखता हूँ
अपने भीतर उसे
तहियाना चाहता हूँ
नहीं होता है तह लगाना उसका
मुट्ठी में लेकर
घर के भीतर लाने के लिए
व्यग्र होता हूँ
कहाँ आता है
हवा से बातें करने को
दौड़ लगाता हूँ
दौड़ते-दौड़ते थक जाता हूँ
हवा कहाँ मिलती है
लगा
अपने भीतर ही
कोई कहता है
करो समझौता
बुढ़ारी जीवन
सुख से बीतेगा।

66. बूढ़ा

मैं बूढ़ा हूँ
बुढ़ापा कटेगा कैसे
चिन्तित हूँ बस इसी चिन्ता से
लगा हमें
किसी सम्भावना का जन्म
मेरे अन्तरतम मे
हो गया है
मैं बुढ़ापे से उबर गया हूँ
हट्ठा-कट्ठा स्वस्थ व्यक्ति हूँ
चिन्ता को
आनन्द खा लिया
और
बुढ़ापे को जवानी ने पटक दिया
परावलंबी से स्वावलंबी जीवन
जीने का आनन्द लगा लूटने
और दूसरे बूढ़ों को भी
करने लगा प्रेरित
लगा आनन्द बाँटने।

67. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ तो
जीवन की गाड़ी का
चक्का जाम हो गया
मन में आया
मैं तो कवि हूँ
समाज से विभिन्न प्रकार के
रंगो को लेकर
लिखने लगा कविता
कविता में रंग-विरंगी भावनाएँ
सुशोभित करने लगा
कबीर सा अमरता की
राह पकड़ने लगा
लगा
कबीर राम को जैसे
अपने कर्घा पर
कात सकते हैं
वैसे ही क्यों न मैं भी
इस बुढ़ापे में
राम का नाम जपकर
बुढ़ापे की गाड़ी पर चढ़कर
स्वर्ग को सिधार जाऊँ।

68. बूढ़ा

वृद्ध हूँ
रात्रि की अधपहरिया में
हमें मिल गया
जीवन की राह तो
आकृति में
परिवर्तन दिखा
रोआँसा मुँह खिलखिलाने लगा
हँसते-हँसते
जवानी की ललक मिली
मन में हुलास हुआ
आशा की अरगनी पर
सुखमय जीवन लटकता देखा
प्रसन्नता की लहर उठी
एकाकी जीवन को प्रफुल्लित किया
पोथी-पतरा से प्रेम हुआ
जीवन पोथी में रम गया
बुढ़ापा वरदान बना...।

69. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
अन्धेरे को
पहचानने की रखें क्षमता
अन्तस के प्रकाश को
सहेज कर रखने की
मनः स्थिति बनाइए
विचार आचार को
शुद्ध बनाकर
जीवन की गाड़ी को
सुचारू रूप से चलाइए
और
मानवीय संवेदनाओं के अकाल में
सद्विचार बरसाते रहिए
हाथ में हाथ मिलाकर चलिए
बुढ़ापा हर्षित रहेगा

70. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
कैसे चलेगा जीवन मेरा
असमंजस में काटता हूँ कष्ट
नहीं देखता
संशय का समाधान
आपको अपने में मिलेगा
समाज स्वार्थी और
एकांगी सिमटा दिखेगा
निरूपाय को
आकांक्षित क्षितिज विस्तार देगा
वही जीवन दिशा
करेगा निर्धारित
भविष्य की चिन्ता में मत रहिए
वर्तमान में जीवन जीने के
राह पर चलते रहिए
चलते रहिए
बुढ़ापे को भगाते रहिए...।

71. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
बुढ़ापा में
मेरा आँसू
किसी को दिखाई नहीं देता
सबसे अधिक
दु:ख उसी को होता है
जो रहते हैं मौन
मौन की भाषा
कोइ नहीं सुनता है
न देखता है
न समझने का
प्रयास करता है
पुरजन
परिजन
स्वजन
अपने-अपने
कामो में व्यस्त रहते हैं
गुड़ की मार बीरा सहता है
ऊपर से मृत्यु का भय
अभिशापित किया हुआ है
जीवन-मृत्यु की कलह
घड़ी का पेन्डुलम बना है।

72. बूढ़ा

मैं सेवा मुक्त हुआ
प्रसन्न था
परेशानी से मुक्ति मिली
आराम की जिन्दगी
जीने लगा
दु:ख को हुआ
मैं बूढ़ा हो गया हूँ
दौड़ा वह मेरे पास
मैंने उसका स्वागत किया
मैंने कहा
मैंने गीता पढ़ी है
सुख-दु:ख को
एक ही समझता हूँ
दु:ख ठहर गया
किन्तु बोला
मैं यहीं रहूँगा
इतने में ही
पीड़ा-बेचैन, माया और मोह
का आगमन हुए
उनका स्वागत किया
मैंने कहा
दु:ख के साथ आप लोग भी रहें
तीनों को लगा
यह बूढ़ा है स्थित प्रज्ञ
दाल न गलेगा किसी का
भागा...।

73. बूढ़ा

बुढ़ापे में
मैं कहाँ जाता हूँ
सुबह-सुबह मौर्निंग वाक पर
अब मैं
साधिकार कहाँ माँगता हूँ चाय
जब मिलता है
पी लेता हूँ
बैठ जाता हूँ
नाश्ते की आश में
नाश्ते के बदले में
भोजन मिल जाता है
खा लेता हूँ
कहाँ बोलता हूँ
एक भी शब्द
शब्द को अपने ही
मुँह में रखता हूँ
घर-घरनी और लोग
व्यंग्य का बान छोड़ते है
हमें लगता है
मैं बहरा-गूंगा हूँ...।

74. बूढ़ा

बूढ़ा सोया था
या जगा
किन्तु देखा
एक स्वप्न
मृत्यु आई
पूछा
मरने से पहले
क्या है तुम्हारी
अन्तिम अभिलाषा
मैंने कहा
जीवन की जिजीविषा
मृत्यु
उल्टे पैर भागी...।

75. बूढ़ा

बूढ़ा
समुद्र के जैसे
कभी न कोई
धावों के विषय में
पूछता है
सागर के पास
नमक के अतिरिक्त
कुछ नहीं है
और
बूढ़े के साथ
अपने अभावों का
पहाड़ है
बूढ़े के साथ
मात्र दुःख दर्द है।

76. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
निशा भारी रात में
देखा एक स्वप्न
कुछ आहट सुना
लगा
मृत्यु आ रही है
धीरे-धीरे
हमारी ओर
चुप-चाप
मैं उठकर
भागने की चेष्टा करता हूँ
जिससे वह हमसे दूर रहे
कुछ दिन और भी
मैंने जीना सीख लिया
उत्कृष्ट ढंग से
मृत्यु की छाया में...।

77. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
पल-पल को
जीवन जीने का
साधन बनाएँ
अकारण
किसी के पास न जाएँ
समय अपने काम-धंधे में लगाएँ
जो सोचें उसमें व्यस्त रहें
वेद की भाँति
पदार्थ गत
मुक्ति कामी बनने
सबों का कल्याणकारी
मानव का कल्याणकारी
मानव का प्रतीक बनकर
ईश का पुजारी बनें
भवसागर पार करने का
अधिकारी बनें।

78. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
बहुत दिन से
सोचता हूँ
विदेश से
बेटा आएगा
सब धन
उसके नाम करेंगे
फिर शांति से मरूँगा
नहीं आये
बेटी-दामाद और
नाती-पोता को
फोन करते-करते थक गया
नहीं किसी ने फोन उठाया
होकर निराश
सोचता रहा
कोई आता
वंश के लोग
मृत्यु के बाद
उद्धार करता
कोई न आया
आया
पुराने नौकर का बेटा
देखते ही बहुत खुश हुआ
उसी को पोश्यपुत्र बनाकर
कर लिया मार्ग का उद्धार और प्रशस्त
सुखमय जीवन हुआ...।

79. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
बुढ़ापे का जीवन
जीने का तरीका
मैं जानता हूँ
बाल-बच्चें की
सारी बातें मानता हूँ
बंशी बजाता हूँ
बाँस की नहीं
चैन की वंशी
जब जो देता है
खा लेता हूँ
नहीं देता है
लोटा भर पानी
पी लेता हूँ
डकार करता हूँ
किसी के विरोध में
कुछ न बोलता हूँ
मेरे विरोध में बोलता है
सुनकर भी ध्यान नहीं देता
सुखमय जीवन जीता हूँ।

८०. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
लोगों के बीच
चाहता हूँ जीवन जीना
कोई न मिला
बैठा हूँ सुनसान जगह पर
देखता हूँ
आत्म विश्वास को खड़ा
लगा
बुढ़ापे का जीवन जीने के लिए
आवश्यक है आत्मशक्ति
आत्मशक्ति के बल पर
बड़ी से बड़ी मिलती है सफलता
आत्मशक्ति जीवन के जीबटपन का
पोषक तत्व बनता है
जीवन की जटिलताओं को
सुगम बनाता है
और
आत्मविश्वास
साहस का पैगाम भेजती है
आत्मशक्ति और आत्मविश्वास
जीवन का संबल बना
बुढ़ापा अभिशाप के बदले
वरदान बना...।

81. बूढ़ा

वृद्ध हूँ
विवश जीवन ने
व्यथित किया है
लोगों को खोजता हूँ
लोग हमें
भूत समझते है
हमें देखते ही
भागती है पीछे की ओर
हमें भी डर लगता है
आँख मूँदता हूँ
देखता हूँ मृत्यु को
हड़बड़ा कर
गिरता हूँ पलंग से...।

82. बूढ़ा

बुढ़ापा भगाने को
हाथ में छड़ी लेकर
जीवन पथ पर चलता हूँ
जीवन की अनुभूति से
करता हूँ जीवन प्रशस्त
किसी को न देखता हूँ
फिर अपनी इच्छा की आकाश गंगा में
सम्बन्धों का सौरमंडल देख कर
होता हूँ आनन्दित
सबसे बातें करता हूँ
अनुपम सुख पाता हूँ
अपने आप को
ढूंढकर व्योंत जीवन-यापन का
प्रसन्नता के सागर में
कभी डूबता हूँ
कभी उभरता हूँ
जीवन का मर्म समझता हूँ
इसलिए चिन्ता नहीं करता हूँ...।

83. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
तो लगा
शनैः शनैः मेधा
हमसे मुँह मोड़ रही है
शिथिल हुआ हाथों का गतिशीलता
कलम रूठ गया
कविता की हुई मृत्यु
जीवन से जीवन
दूर गया
उचट रही अब निंद भी
काटने दौड़ी
चेतना शून्य हुआ शरीर
देखता रहा टुकुर-टुकुर
अनुभूति हुई
पंच महाभूत में
मैं मिल रहा हूँ
शनैः शनैः शनैः।

84. बूढ़ा

बुढ़ापे का जीवन
सुनसान लगा
हुआ सचेष्ट
कुछ ढूँढ़ने की प्रक्रिया में
पोथी का भंडार मिला
लगा
सहारा देख रहा हूँ
पोथी पतरा में
तो जीवन का मर्म मिला
कभी सुखान्त कथा पढ़ता
तो बुढ़ारी भूल कर
आनन्द के सागर में लगता तैरने
बाल कथा पढ़कर
बालक बन कर खेलते
बचपन के दोस्त याद आने लगे
कैसे एक दूसरे के साथ
मिट्टी से घर बनाते फिर तोड़ते
देह में लेपते गर्दा
प्रेम कथा पढ़ते तो
जवानी याद आती
प्रेमानन्द में मग्न
लगा हमने
पा लिया जीवन रतन
फिर बुढ़ापे को।

85. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
नहीं
मैं कवि हूँ
मेरे साथ
ढेर की ढेर
बखारी की बखारी
कविताएँ हैं
कविता लिखता हूँ
गाता हूँ
पोथी छपा कर
बाँटता हूँ
कोई-कोई खरीदता है तो
आनन्दित होता हूँ
पैसे के पीछे नहीं भागता हूँ
तरह-तरह के विषयों पर
लिखता ही रहता हूँ
मस्त रहता हूँ
घर का कोई न आता याद
न कोई बाधा न कोई घात
धन से नहीं हैरखता मतलब
भाई-समाज को हिस्सा दिया
जहाँ रहता हूँ
कविता ही रहती है याद
कविता से ही करता हूँ प्रेम
बुढ़ापे में युवा दिखता हूँ...।

86. बूढ़ा

वृद्ध हुआ
जो सन्तान
हरा-भरा वट वृक्ष समझता था
अब समझता है
पतझड़ का ठूंठा-सड़ा
जो पहले
शरीर में
चमगादड़ जैसा
चिपका रहता था
वह अब दूर से ही कहता है
पिताजी ! दरबाजे को छोड़
गोशाला में रहिए
गाय की सेवा करने पर
मिलेगा मोक्ष
जब तक जीयेंगे
तब तक
इधर-उधर नहीं देखेंगे।

87. बूढ़ा

बौआ ! बूढ़ा हुआ हूँ या बर्वाद हुआ हूँ
मैं पेंशन पाकर चैन से रहता हूँ
पिताजी हमें नहीं है कोई प्रयोजन
आप घर-घर क्यों बौखते रहते हैं
बौआ ! मैं जीवन का आनन्द ढूँढता हूँ
इसलिए लोगों को ढूँढता रहता हूँ
पिताजी ! आप लोगो के पास जाएँ
किन्तु मत करिए हमारी निंदा
बौआ मैं खुद ही चूल्हा फूँकता हूँ
आखों का आँसू बहाता हूँ
पिताजी ! मैं हूँ गुलाम आपकी बहू का
गुलामी करता हूँ सुख से रहता हूँ
बौआ ! आप कुल में दाग लगाते हैं
आप बीबी का कुक क्यों बनते हैं?
पिताजी आपके बहू की कमाई खाता हूँ
आपके पोता-पोती को खेलाता रहता हूँ
बौआ ! एक हाथ से बोयेंगे तो दूसरे हाथ से काटेंगे
मैं तो पका आम हूँ गिरने की राह देखता हूँ
कहते हैं कवि इन्द्र वृद्ध कराहता बेटा के घाट पर
और बेटा आनंद लूटता पत्नी के ठाठ पर।

८८. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
मृत्यु का भय
निंद को किया हराम
जीने की लालसाएँ
हो रहा अब क्षीण
फिर आया ध्यान में
जब मरूँगा मैं
स्वयं का मृत नहीं देखूँगा
इसलिए मृत्यु का भय
चकना चूर हुआ
जीवन जीने की
जग गयी तृष्णा
मन की सारी निगेटिवीटी
कोसों दूर गया
बुढ़ारी जीवन
अपना ज्ञान बाँटने में
और
दान-पुण्य करने में लगाया
अब जीवन सुख से बीत रहा...।

८९. बूढ़ा

वृद्ध पीड़ित है पीड़ा से
टहलू भी अब भाग गया
खोजता है सहारा
देखता है आंगन भरा हुआ
बाल बच्चे न आते पास
नहीं कहता है बाबा
ढूँढ़ता है सहारा
जिसके लिए बेचा ईमान
वही समझता अब बेईमान
ढूढ़ता है सहारा
अड़ोस-पड़ोस में देखता है
वह भी कहता है घुसखोर
देखकर मुँह लेता फेर
ढूँढ़ता है सहारा

90. बूढ़ा

बूढ़े हुए
जीवन की फुलवारी के
सभी फूल झड़ गये
इधर-उधर
उसके स्मृति में हम
जीने की राह ढूँढ रहे हैं
हास्य की रेघा जो थी छिटकी
आकृति की शोभा बढ़ाती थी
विशादों को बादले घेर लिया
कहीं किसी को न देखा अपना
सुख-दु:ख की नाव को
खुद ही देखने लगा।

91. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
घर में ही रहता हूँ
जीवन जीने की
कोई भी तर्क-युक्ति
कुछ भी न चल रहा
लगा मुझे
हो गया मेरा
प्राण-पखेरू उड़ने का समय
खोंता खाली होकर
धरती को चूमेगा
वहाँ से आगे की राह
अवरुद्ध रहेगी

अपने को भूलेगा
किन्तु शून्य गगन में
शून्य धरा पर
शून्य रूप में
शून्य में मिल जायेंगे...।

92. बूढ़ा

अनाथ बचपना
थका हुआ सा
असहाय बुढ़ापा
हतप्रभ जीवन
दिशाहीन गन्तव्य
बेचारा घिसक रहा है
यह जीवन रथ
कहाँ जाएगा
किधर जाएगा
नहीं समझ रहा
बूढ़े का मन...।

93. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
लगा
जीवन का इन्द्रधनुषी रंग
काला-काला हो रहा
अपना घर
बेटा-बहू का घर
मेरा घर
अब पेड़ के नीचे है।

94. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
अनुभव हुआ
ओस के बूँद सा
खुशी होता है
खुशी क्षण
कब आता है
कब जाता है
अनुभव जब तक होता है
तब तक स्वजन का
भूलता है प्रेम
दुख का पहाड़ ढहता है।

95. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
जीवन
तनावों का
शिकार बना।
शरीर अवांछित लगा
मृत्यु के
मकड़ जाल में
फँसा हुआ लगा

96. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
लगा
मेरी काया से
कुछ झर रहा

चुपचाप नि:शब्द
वृक्षों के पत्ते के जैसा
जो था दृश्य
अदृश्य हुआ
मन की बात
मन में ही रह गई।

97. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
अन्धेरे में
कफ उगल रहा हूँ
प्रकाश में
अँधेरा देखता हूँ
टोइया-टापर मारता हूँ।

98. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
सोचता हूँ
जहाँ
लोगों के भरोसे का
उतर गयी है चाम
आकृति से
बूढ़ा कहाँ जाएगा
राह ढूँढ़ता है
आगे में
गड्ढा देखता है।

99. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
छट पटाता हूँ
जिन्दगी के कटोरी में
उम्मीदों का जल देखता हूँ
जल ही तो जीवन है
सुख से जीता हूँ...।

100. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
निश्चिन्त
सुख-दु:ख
भोगना पड़ेगा
जन्म हुआ है
तो मृत्यु होगी ही
विश्व रंगमंच पर
नाटक अपना करना ही पड़ेगा।

101. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
जीवन जीने के लिए
बेचैन हूँ
अंग-प्रत्यंग
शरीर से अपनापन
किसी ने नहीं रखा है
क्या करें क्या नहीं
असमंजस में पड़ा हुआ हूँ
मृत्यु के भय से डरा हुआ हूँ ।

102. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
देखता हूँ
अनेक वर्षों से खड़ा
एक पहाड़
जैसे लगता है
वह सोचता है
कोई आएगा
उसके शिखर पर
भगाएगा अकेलेपन का जीवन
कोई न आया
मेरी भी आँखे पथरा गयी
शरीर पहाड़ हुआ।

103. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
जीवन कराह रहा
भविष्य की खोज में
आकाश की ओर
देख रहा जीवन...।

104. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
लगा
मेरे ह्दय में
एक ग्रंथ है
जिसमें मेरा भूत है
पृष्ठ जो उलटता हूँ

स्वर्णिम युग को देखता हूँ
आनन्द की खेती करता हूँ
खूब मजे से बाँटता हूँ
आनन्दित रहता हूँ...।

105. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
लगा
काला हो गया हूँ
जीवन का इन्द्रधनुषी रंग
और सम्बन्ध हुआ अनजान
जीवन जटिल हुआ
मृत्यु लगी सरल-सामान्य...।

106. बूढ़ा

वृद्ध हूँ
शिव ने एक बार
पिया विष तो
नीलकंठ बन गये
मै प्रतिपल
समाज की
वाणी में मिलाये विष को पीता हूँ
फिर भी हमें कोई उपाधि नहीं मिलती
उससे भी हमें न मतलब कोई
पर मेरी ओर कोई देखता भी नहीं
वही दु:ख का कारण है।

107. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
इसलिए लगता है हमें
बुढ़ापा
निष्क्रियता का प्रतीक
लाठी के बल पर
जीवन को ठक-ठकाता
है मृत्यु की राह देखता हूँ।

108. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
बुढ़ापे में
आँखों से आँसू
टप-टप करेगा ही
उसकी संभावना
राह घेर लिया
आँसू झरना बना
कोई पोछने वाला नहीं
जैसे लगा
आँखे कह रही
काम हम करते हैं अपना
आप जीवन जीते
मृत्यु की राह देखते हैं।

109. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
घूमता हूँ लेकर झोला खाली
सहयोग के बदले समाज का
एकाकी जीवन
कहता है जीने को...।

110. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
जगाऊँगा आध्यात्मिकता को
भगाऊँगा नकारात्मकता को
सकारात्मक भाव
मन में होगा
हृदय में साहस-उत्साह जगेगा
और आशा का दीपक जलेगा
जीवन सूर्य-चन्द्रमा बनेगा...।

111. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
जिन्दगी हुई पराधीन
स्वाधीनता खोज रहा हूँ
संवेदनहीन समाज में
वृद्धाश्रम को देख रहा हूँ...।

112. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
मेढ़क के जैसा
टर्र-टर्र करता हूँ
किसी के कान पर जूँ नहीं रेंगता
जैसे लगता है
मैं थाली का छोड़ा हुआ
जूठन हूँ
सूखा हुआ सड़ा-सा पेड़ हूँ
कब गिरेंगे
किधर गिरेंगे

कहाँ गिरेंगे
कौन जानता है
कहाँ है मृत्यु
मृत्यु को ढूँढ़ने
आगे ससरता हूँ...।

113. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ अन्धेरे में डूबा हूँ
धरती पर प्रकाश देखता हूँ
दौड़ता हूँ
चारों खाने चित्त गिर जाता हूँ...।

114. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
जीवन जीने को
सीढ़ी पर चढ़ते-चढ़ते
आँखे फाड़ कर
देखता हूँ
भविष्य अपना
अन्धकार मय लग रहा
हो गया उदास
फिर सोचता हूँ
फिर देखता हूँ
अँधेरे में उजाला
आशा का कमल खिला
भविष्य की राह दिखी
सुकून-चैन मिला
जीवन सुख से कटने लगा...।

115. बूढ़ा

वृद्ध हूँ
इधर-उधर लुढ़कता हूँ
असमंजस में खोया हूँ
मृत्यु का रीह देखता हूँ।

116. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
अकेले सुरंग में
कहीं खो गया हूँ
चौराहे पर पहुँचा
कोलाहल करता भीड़
एक भी आदमी
कहाँ दिखता है
सुनसान डगर पर चलता हूँ
मृत्यु को खोजता हूँ।

117. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
लगता है जैसे
वृद्ध की खुशी
बूँदे हैं ओस की
जब ही वो गिरता है
तभी दु:ख टपकता है
मृत्यु की राह पकड़ता है...।

118. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
स्वजन का फेका हुआ
जूठन हूँ
परिजन के लिए
वाइरस हूँ-कोरोना
पुरजन को क्या है मतलब
अब लगता है अनाथ हूँ
इधर-उधर भटकता हूँ
कोई मिलता नहीं सहारा
मृत्यु की राह ढूँढ़ता हूँ
किसी तरह जीवन को ढोता हूँ।

119. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
लड़ता हूँ बूढ़ापे से
बाल-बच्चे से खाता हूँ पछार
शोक-सागर में डूबता हूँ
विकराल मृत्यु को देखता हूँ
तुलसी की माला फेरता हूँ।

120. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
याद आया
टूअर बालपन
दिशाहीन, बेकार जवानी
लगा कभी सुख आएगा
तभी बुढ़ापे ने घेर लिया

पदचाप न घिसका
मन ठहरा सा
तन शान्त हुआ।

121. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
घुटना टेका
झुका पीठ
हड्डी पस्त
थका पैर
बेटे के असघनी पर
जीता हूँ लूढ़का रोटी पर।

122. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
क्या था
कैसा हूँ
धिक्कार है
समाज को
समाज अन्धा बना
बहरा बना
अन्यायी किसी को न छोड़ेगा
वर्तमान और भविष्य में
न कोई अन्तर रहेगा...।

123. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
शनैः-शनैः जीवन की गाड़ी
उधारी पर लुढ़की
घर-घराना बेच दिया
उधारी का पहिया टूटा
भिखारी का रास्ता पकड़ा।

124. बूढ़ा

वृद्ध हूँ
मैं नित्य-प्रति
पुरजन, परिजन
स्वजन का
व्यवहार और
वाणी में घुला
विषपान करता हूँ
शिव !
एक बार विष पीया
नील कंठ बन गये
हमें कहाँ कोई
किसी नाम से
संबोधित करता है...।

125. बूढ़ा

बुढ़ापा है
किसी जन्म का पाप
किसी ऋषि का शाप
जीवन का अभिशाप

126. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
जीवन तनावों का
शिकार बना
शरीर लगा अवांछित
मृत्यु की
मकड़ जाल में
फँसा हूँ...।

127. बूढ़ा

ओ वृद्ध!
ध्यान पर आता नहीं
सुनिये-सुनिये
बुढ़ापे में
सभी रोते हैं
किसी का रोना
कोई न सुनता है...।

128. बूढ़ा

हे देवाधिदेव!
मैं बूढ़ा हूँ
जीवन का अन्तिम क्षण
गिन रहा हूँ
मैं जीवन के धर्म-कर्म
धन सम्पति सभी वस्तु को
तेरे नौके में डाल चुका हूँ
मझधार में नाव देख रहा हूँ
उस पार ले जाइए
तड़प रहा हूँ
तृष्णाहीन तृष्णा को
बैठा देखता हूँ
तेरे नौके पर
उस पार में
खुद को कहाँ देखता हूँ...।

129. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
दु:ख का कोड़ा खाता हूँ
फिर भी जीने को
ईश्वर की पूजा अर्चना करता हूँ।

130. बूढ़ा

बुढ़ापे में
निहारता हूँ आने वाले को
सड़क के किनारे
एकाकी बैठा हूँ
देखता हूँ एक स्वप्न
जीवन की संध्या वेला में
सुख-दु:ख, धन सम्पति
क्रिया-कर्म सभी हुए लुप्त
जीवन के रंग मंच पर
जो एकतारा बजाने को था
सभी बजा चुका हूँ
जप की माला पर
गिन रहा हूँ
उस नीरव भाषा की ध्वनि...।

131. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
मौन ही रहता हूँ
मुझे मिली एक भाषा
समझा जिसने मेरा मौन
मेरा बुढ़ापा सुख से गुजर रहा

132. बूढ़ा

बाल-बच्चा
जन्म जन्मान्तर का
संस्कार को भूला
अनादर का माला पहनायी
पूर्वजों के कर्मकाण्ड को
अँधेरे का मानदंड कहा
व्यथा का गठ्ठर
सिर पर रखा
लगा हमें
लोगों के बीच लोग ही
दिवार बनकर खड़ा है
मैं जेल में बन्द पड़ा हूँ...।

133. बूढ़ा

वृद्धावस्था में
मेरा मरनासन्न शरीर
मुझमें
जीने का दर्द
सहता रहता है...।

134. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
बुढ़ापे मे
एकाकी जीवन
पीड़ा की खान बना

शीर्ष में
अपना चेहरा
खुद भी नहीं पहचाना
लगा मुझे
भीष्म पितामह जैसे
वाणों के विस्तर पर
मैं लेटा-लेटा
मृत्यु रूपी उत्तरायण का
प्रतीक्षा कर रहा हूँ...।

135. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
तो लगा हमें
मै जाऊँगा स्वर्ग
अकेला ही नहीं
अपने साथ नरक भी
लेकर जाऊँगा...।

136. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
अपनी शारीरिक
मानसिक स्थिति जानकर
अनुभव किया
मैं क्रमश:
अप्रासंगिक हो जाऊँगा
जैसे खिला हुआ फूल
मुरझाकर एक पल
हो जाता है भूलुंठित
वैसे ही मैं
कभी कहीं मृत्यु के
मुँह में जाऊँगा।

137. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
मैं जवानी को
स्मरण कर सकता हूँ पर
कभी युवा नहीं हो सकता
जैसे चन्दा रात को प्रकाशित करता है
पर उसे प्रकाश में नहीं बदल सकता।

138. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
घुटने टेक दिया
जीवन से
उबने लगा
टेढ़ी कमर
हड्डियाँ पस्त
सिकुड़े हुई त्वचा
कहीं किसी से
मिला नहीं तो
बेटे के असघनी पर
लटकी रोटियाँ
जीवन का आधार बनी।

139. बूढ़ा

मै बूढ़ा हूँ
जीने की भीख
न तो मैं ईश से माँगता हूँ
माँगता हूँ जीने की शक्ति
जब तक जीयें
सुख और शांति से जीयें...।

140. बूढ़ा

वृद्धावस्था से जीवन
करता है युद्ध
जीतता है जीवन
प्रसन्नता का आवरण चढ़ता है
हारता है बुढ़ापा
दिशाहीन कदम ससरते हैं
शोक रहित होकर
स्वयं को स्वयं कहता है
अब मैं जा रहा हूँ
सुख-दु:ख को भूलने
मृत्यु के मुँह में घुसने...।

141. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
जानता हूँ मैं
दु:ख-दर्द चलते हैं आगे-पीछे
मैं आनन्द को साथ लेकर चलता हूँ
मेरे जीने की तृष्णा
मृत्यु को भगाते रहती है
मैं जीवन को ढो रहा हूँ...।

142. बूढ़ा

हे भगवन।
मैं बूढ़ा हो गया हूँ
पृथ्वी के अनुपम सौन्दर्य के बीच

मैं जीना चाहता हूँ
मैं जीवन्त हृदय से
सूर्य-चन्द्रमा के किरणों संग
पुष्पित फुलवारी में
और जीना चाहता हूँ...।

143. बूढ़ा

बुढ़ापा में
मृत्यु-वीणा का
चारों ओर
निनाद सुनकर
चौंक जाता हूँ
श्री चरणों में
स्वयं को अर्पित कर
मृत्यु की चिता में
कूद जाता हूँ...।

144. बूढ़ा

बुढ़ारी में
इस संसार के सौन्दर्य की
गोद में खेलना चाहता हूँ
सुख-दु:ख हास्य-रूदन
मिलन विरह के पलने पर
झूलना चाहता हूँ
मरण की वीणा पर
जीवन जीने का
गीत गाना चाहता हूँ
तुम्हारा अमर फल
खाना चाहता हूँ...।

145. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
पीछे देखा
तो अतीत
दही सा जमा
दृष्टिगत हुआ
सुखमय जीवन
दु:खमय नदी बन गया...।

146. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
तो लगा
कैसे प्रसन्नता को बटोरुँगा
प्रसन्नता सम्भालने की
चिन्ता से चिन्तित हूँ
दु:ख से लड़ता हूँ
सोचता हूँ
सुख-दु:ख के द्वन्द्व में
मृत्यु पर खड़ा देखता हूँ...।

147. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
पीछे देखा
तो अतीत
हीरे सा
चमकने लगा
किन्तु बुढ़ापे की भट्ठी मे
अनुपम जीवन
खौलने लगा...।

148. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
बुढ़ापा ने आक्रान्त किया
रह-रहकर
घटने बढ़ने लगा
मृत्यु जीवन को
डराने लगी
जीने की तृष्णा
वितृष्णा हो गयी
लगने लगा
मैं सोया हूँ
चिरनिद्रा में...।

149. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ
तो लगा
जीवन की ताप में
झुलस गये सपने
कोई न मिला अपना
भूख का इतिहास ने
बदल दिया
काया का भूगोल...।

150. बूढ़ा

जीवन का कर्ज-वर्ज चुकाते
जवानी गयी
बुढ़ापा आया
स्वजन-परिजन का स्नेह

दूर गया चहुँ दिशा से
मन-प्राण का दुरदुराहट
झकझोर दिया
बेसहारा समझा
किन्तु जब अन्त:करण
बार-बार धिक्कार रहा है
तब समझ में आया
आकुल-व्याकुल प्राण
मात्र मृत्यु की कल्पना में
भटकता जियेगा...।

151. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
बुढ़ारी की चकलो पर
रोटियाँ बेलता हूँ
रोटी के बदले में
आँटा फेका हुआ देखता हूँ।

152. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
लड़खड़ाता हुआ
चलता हूँ
मृगतृष्णा के पीछे
बेतहासा दौड़ता हूँ
बुढ़ापे की वेदना की टीस
भूलता हूँ
आगे बढ़ता हूँ
पेड़ हँसते है
संवेदनाएँ रोती हैं
मानवता चल रही
मृत्यु
महराई ठोकता है...।

153. बूढ़ा

वृद्ध हुआ तो
अनुभव हुआ
काया हुई बेकार
हँसी हुई बेजान
बेकार जीवन में
रोटी हुआ भगवान...।

154. बूढ़ा

वृद्ध हूँ
सोच विचार में पड़ा हूँ
लगा
जीवन गुजर गया
वह भी नहीं गुजरा
किन्तु
जीवन-प्रवाह
ठहर-गया।

155. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
अनाथ बालपन
दिशाहीन बेकार जवानी
ईर्ष्या-द्वेष, कलह से पीड़ित
जिन्दगी में सूखा स्वप्न बना
पदचाप ससरा
मन ठहरा सा
हृदय काँप गया
लगा
तन शान्त हुआ
मृत्यु आ गई।

156. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
बुढ़ापा में
न कोई धर्म-कर्म
न कोई सम्प्रदाय
न मतलब रखता है
न सामाजिक, न असामाजिक
विचार-विमर्श में
पड़ता हूँ
जीवन
रोटी से चलता है
रोटी ढूँढ़ता हूँ
मृत्यु को देखता हूँ
घर की ओर भागता हूँ...।

157. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
मेरे साथ एक दृष्टि है
अकेले रहने की कला
जीने की कला
सिखलाती रहती है।

158. बूढ़ा

वृद्ध हुआ
अतीत का सुकर्म-कुकर्म
ज्वालामुखी सा उबलने लगा
समझ में आया
जीवन का अन्तिम पड़ाव आया

जिजीविषा होने लगा गौण
जीवन-साथी त्याग दिया
कायिक-वाचिक-मानसिक
होने लगा हास
मन कहने लगा
सो जाओ चिर निद्रा में।

159. बूढ़ा

बूढ़ा हुआ तो
हँसी को छीन लिया
उसे ढूँढ़ने में
दु:ख-दर्द मिला
जीवन दूसरे की
लटकन पर
टँगा देखा...।

160. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
आशा-निराशा की
कठपुतली हूँ
कोई न मान मनुहार
करने वाला दिखता है
देखता हूँ मृत्यु की राह
उसी पर चलता हूँ।

161. बूढ़ा

बूढ़ा हूँ
मृत्यु से नहीं डरता हूँ
जिस दिन मृत्यु दूत आएगा मेरे आँगन

धूमधाम से मृत्यु का स्वागत कर
प्राण अपने उसके आगे रख दूँगा
संचित धन-धान्य
सब अर्पित कर
मृत्यु के रथ पर बैठूँगा...।

162. बूढ़ा

मैं
बुढ़ापे में हमेशा
मृत्यु का आलिंगन करने के लिए
तत्पर रहता हूँ
मृत्यु आएगी तो
उसके आगे रख दूँगा
खल-खल नदी सा
हँसता मन-प्राण
चलने से पहले
खाली हाथ जाने देंगे उसे
जीवन की ऋतुएँ अर्पित कर
फैला दूँगा सब धन-धान्य
और जीवन का आयोजन
गुप-चुप में जब भी वह आएगा
तभी चल देंगे हम इसके साथ।

❀❀❀